Topic :- CHARACTERISTICS OF THE NATURE OF SOCIAL CHANGE

सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति की विशेषताएं निम्नलिखित हैं

(1) सामाजिक परिवर्तन एक सामुदायिक परिवर्तन है (Social change is a community change) — इस विशेषता का तात्पर्य यह है कि सामाजिक परिवर्तन का सम्बंध किसी व्यक्ति-विशेष या समूह-विशेष के जीवन में होने वाले परिवर्तनों से नहीं होता है। सामाजिक परिवर्तन तो वास्तव में वह परिवर्तन है जो पूरे समुदाय के जीवन से सम्बंधित हो, अर्थात उस परिवर्तन को ही सामाजिक परिवर्तन कहते हैं जिसके प्रभाव को सामुदायिक रूप से अनुभव किया जाता है। वास्तव में सामाजिक परिवर्तन इसी अर्थ में सामाजिक है कि इसमें अन्तर्निहित परिवर्तन की धारणा 'व्यक्ति-तक' नहीं है।

(2) सामाजिक परिवर्तन एक सार्वभौमिक घटना है (Social change is an universal phenomenon) — इस विशेषता का सीधा-साधा अर्थ यह है कि सामाजिक परिवर्तन सर्वव्यापी है और इसीलिए परिवर्तन की यह धारणा बिना किसी अपवाद के लगभग सभी समाजों में सामान्य है। ऐसा कोई समाज विश्व के किसी भी कोने में नहीं है जिसमें परिवर्तन न होता हो एवं जो पूर्णतया स्थिर हो। आदिम से आधुनिम समाज विश्व के किसी भी कोने में नहीं है जिसमें परिवर्तन न होता हो एवं जो पूर्णतया स्थिर हो। इसीलिए बीरस्टीड ने कहा है कि "किन्हीं भी दो समाजों का इतिहास एकसमान नहीं होता, किन्हीं भी दो समाजों की संस्कृति एक जैसी नहीं होती, कोई भी एक दूसरे का प्रतिरूप नहीं है।"

(3) सामाजिक परिवर्तन की गति असमान तथा तुलनात्मक है (Speed of Social change is unequal and comparative)

- इस विशेषता का अर्थ यह है कि सामाजिक परिवर्तन होता तो सभी समाजों में है, इस परिवर्तन की गति प्रत्येक समाज व विभिन्न समाजों में एक जैसा नहीं है। इसका मुख्य कारण यह है कि सामाजिक परिवर्तन को लाने वाले कारक प्रत्येक समाज में एक समान रूप से क्रियाशील नहीं होते हैं।

(4) सामाजिक परिवर्तन की गति व प्रकृति समय-कारक से प्रभावित व सम्बंधित होती है। (Nature and Speed of Social change is Affected by and Related to time-factor) इसका तात्पर्य यह है कि किसी भी समाज में प्रत्येक समय, काल या युग में परिवर्तन की गति एकसमान नहीं होती। मध्य युग की तुलना में आधुनिक युग में परिवर्तन की गति तेज है।

(5) सामाजिक परिवर्तन एक अनिवार्य नियम के रूप में होता है (Social change occurs as an essential law) - परिवर्तन प्रकृति का नियम है और सामाजिक परिवर्तन भी उसी अनिवार्य नियम द्वारा नियमित व निर्धारित होता है। यही कारण है कि सामाजिक परिवर्तन होकर ही रहता है, चाहे वह परिवर्तन प्राकृतिक कारकों द्वारा अनिवार्य रूप से हो अथवा नियोजित रूप में समाज द्वारा ऐच्छिक आधार पर जान-बूझकर किया जाता है।

(6) सामाजिक परिवर्तन की निश्चित भविष्यवाणी नहीं की जा सकती (Definite Prediction of Social change is not possible) - कोई भी व्यक्ति सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति के सम्बन्ध में कोई निश्चित पूर्व-अनुमान नहीं लगा सकता। इस अर्थ में सामाजिक परिवर्तन कुछ कुछ अनिश्चित होता है, पर इसका तात्पर्य यह नहीं है कि सामाजिक परिवर्तन का कोई अन्तर्निहित नियम होता ही नहीं है। इसका तात्पर्य तो केवल इतना ही है कि अनेक आकस्मिक कारक भी परिवर्तन ला सकते हैं और लाते भी हैं। इसलिए भविष्य के परिवर्तन के सम्बन्ध में निश्चित भविष्यवाणी करना कठिन है। सामाजिक विचार, मनोवृत्ति, आदर्श या मूल्यों में भविष्य में क्या परिवर्तन होगा, यह बताना हमारे लिए निश्चय ही कठिन है।

समाप्त